

# नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

अहमदाबाद और गाजियाबाद की हालिया घटनाओं ने हर अभिभावक और शिक्षक को चिंता में डाल दिया है। अहमदाबाद में एक छात्र ने अपने ही सीनियर की चाकू मारकर हत्या कर दी। वहीं गाजियाबाद में बच्चों के बीच विवाद मारपीट तक जा पहुंचा और बच्चा चोरी की अफवाहों से लेकर अहमदाबाद तक के मामले सामने आए। यह तस्वीर बताती है कि आज के बच्चे तनाव, आक्रोश और अहमदाबाद तक के मामले सामने आए। यह तस्वीर बताती है कि आज के बच्चे तनाव, आक्रोश और अहमदाबाद तक के मामले सामने आए। यह तस्वीर बताती है कि आज के बच्चे तनाव, आक्रोश और अहमदाबाद तक के मामले सामने आए।

## बचपन को हिंसा से बचाना होगा

बच्चों को भावनात्मक सहारा मिल सके। पाठ्यक्रम में संवाद और जीवन कौशल की शिक्षा शामिल हो, सरकार को बच्चों के लिए ऑनलाइन गेम्स और सोशल मीडिया पर सख्त नियम बनाने चाहिए। जैसे कि बनाए भी जा रहे हैं। परिवारों को रोजाना बच्चों के साथ बैठकर समय बिताना होगा, केवल अंक और करियर की चिंता नहीं, बल्कि उनके मन की बात भी सुनी होगी। मोहल्ला स्तर पर बाल सुरक्षा समितियां बनें और बच्चों के लिए मानसिक स्वास्थ्य मिशन शुरू हो। दरअसल, यह केवल अपराध रोकने की बात नहीं है, बल्कि आने वाले समाज को सुरक्षित बनाने की जिम्मेदारी है। अगर हमने अभी बच्चों के मन की परवाह नहीं की, तो आने वाले सालों में हिंसा और हताशा का तुफान हमारे सामने होगा, बचपन मासूमियत और स्नेह का नाम है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह पहचान बरकरार रहे, बहरहाल, इन घटनाओं का विश्लेषण करते हुए हमें सबसे पहले यह स्वीकार करना होगा कि बच्चे हिंसक पैदा नहीं होते, उन्हें परिस्थितियां हिंसक बना रही हैं। बचपन में गुस्से की ऊर्जा और जिज्ञासा होती है, जिसे सही दिशा में ले जाना परिवार और समाज की जिम्मेदारी है, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि आज की व्यवस्था और प्रतिस्पर्धी जीवनशैली में मां-बाप बच्चों को समय नहीं दे पाते। कामकाज की आपाधापी, आर्थिक दबाव और सामाजिक दिखावे की दौड़ में बच्चों के साथ संवाद और आत्मीयता का रिश्ता कमजोर हो गया है।

जब बच्चे अपने सवाल और भावनाओं के लिए माता-पिता को अनुपस्थित पाते हैं, तो वे सहारा इंटरनेट, वीडियो गेम्स और सोशल मीडिया में खोजते हैं। यह आभासी दुनिया उन्हें असली जीवन से काटकर हिंसा, आक्रामकता और आवास्तविक कल्पनाओं की गिरफ्त में ले जाती है। गेम्स में

दिखाई देने वाली जीतने के लिए किसी भी हद तक जाने की प्रवृत्ति, सोशल मीडिया पर दिखने वाली नकली शान और गुस्से से भरी भाषा, बच्चों की मानसिकता को प्रभावित कर रही है। यह रिश्तों केवल अपराध नियंत्रण या पुलिस की सख्ती से नहीं सुधरेगी, हमें बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर उतना ही ध्यान देना होगा, जितना उनके पढ़ाई-लिखाई और करियर पर देते हैं। समाज को यह भी समझना होगा कि बच्चे हमारी महत्वाकांक्षाओं के बोझ तले दबकर न तो जिम्मेदार बनें और न ही खुशहाल, उन्हें समझ, धैर्य और प्रेम की जरूरत है। अहमदाबाद और गाजियाबाद की घटनाएं हमें चेतावनी देती हैं कि यदि हमने बच्चों के मानसिक संसार को अनदेखा किया, तो आने वाला समाज हिंसा, हताशा और अविश्वास की खाई में धकेल दिया जाएगा, परिवार, स्कूल और समाज—तीनों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि बचपन मासूमियत और स्नेह से भरा रहे, न कि चाकू और आक्रोश से।

## सिंधु की पुकार

# संप्रभुता की वापसी और गौरव की बहाली



अर्जुन राम मेहरा  
केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

मानसून शब्द पूरे भारत में खुशी और गर्व का संचार करता है। यह नवाचार, नवीनीकरण और राष्ट्र के आर्थिक इंजन को तत्काल गति प्रदान करने का प्रतीक है। भारत की भौगोलिक स्थिति, प्रचुर वर्षा के साथ मिलकर, इसकी नदियों को पुनर्जीवित करती हैं और देशभर में जल संसाधनों का विस्तार करती हैं। यह प्रगति के मौसम का प्रतीक है और स्वतंत्रता दिवस समारोहों के साथ मिला दिए जाने पर देशभक्ति की एक अनूठी भावना का संचार करता है। लाल किले की प्राचीर से, प्रधानमंत्री के संबोधन ने एक बार फिर आकांक्षी नागरिकों के लिए एक ऐसा खाका पेश किया जो एक विकसित भारत के निर्माण के व्यापक लक्ष्य को साकार करने का मार्ग प्रशस्त करता है। संसद के इस विशेष मानसून सत्र की शुरुआत में, प्रधानमंत्री ने इसे भारत का गौरवशाली सत्र बताया था। भारतीय सैनिकों का शौर्य, ऑपरेशन सिंधु की सफलता, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के कारखानों पर निर्णायक प्रहार और सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) का स्थगन—ये

अब, मोदी सरकार इस ऐतिहासिक भूल को सुधारने की दिशा में एक और निर्णायक एवं साहसिक कदम उठा रही है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अपने संप्रभु अधिकारों का प्रयोग करते हुए, सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) को तब तक के लिए स्थगित कर दिया है जब तक कि पाकिस्तान विश्वसनीय और अंतिम रूप से सीमा पार आतंकवाद को अपना समर्थन देना छोड़ नहीं देता। प्रधानमंत्री मोदी जी का स्पष्ट आह्वान राष्ट्रीय हितों को कमजोर करने वालों के लिए एक कड़ी चेतावनी है— आतंकवाद और बातवीरता साथ-साथ नहीं चल सकते; पानी और खून साथ-साथ नहीं बह सकते। यह कदम पिछली नीतियों से अलग हटकर एक साहसिक और ऐतिहासिक बदलाव का प्रतीक है। यह केवल एक कूटनीतिक पुनर्संतुलन भर नहीं है, बल्कि अपने संसाधनों और किसानों के हितों एवं संबंधित हितधारकों की आजीविका के अवसरों की रक्षा करने के भारत के संप्रभु अधिकार का एक दृढ़ रणनीतिक दवा है— जो पाकिस्तान की ओर से आने वाले लगातार सीमा पार खतरों के सामने राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत को सर्वोपरि रखता है।

सब भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति के सबूत हैं और राष्ट्रीय मानस पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं। फिर भी, सभी मुद्दों पर खुलकर चर्चा के लिए सरकार के राजी होने के बावजूद, विपक्ष ने बाधा डालने का रास्ता चुना और व्यापक जनहित की कीमत पर विचार-विमर्श को राजनीतिक नोटकी में सीमित कर दिया। देश अरसे से स्वायत्त की राष्ट्रीय हित से ऊपर रखने की कांग्रेस की पुरानी आदत का बोझ ढोता चला आ रहा है। विभाजन की दुखद विधिषोका से लेकर नेहरूवादी कूटनीतिक की महंगी पडने वाली विफलताओं तक, इतिहास गवाह है कि कैसे इन फैसलों ने भारत की मूल अवधारणा को ही कमजोर कर दिया। सिंधु जल संधि (1960) पर बारीकी से गौर करने पर, जनता और देश के विकास की कीमत पर तुष्टिकरण व अति-उदारता की एक ऐसी कहानी सामने आती है, जिसने राष्ट्रीय विकास की संभावनाओं को निरंतर बाधित किया। यह घोर विडंबनापूर्ण है कि भारत के विकास से जुड़े हितों का त्याग एक ऐसे राजनीतिक आकलन से प्रेरित थे जिसने अपने नागरिकों के कल्याण से ऊपर पाकिस्तान के हितों को तरजीह दी। मूल रूप से, विश्व बैंक की मध्यस्थता से हुई सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी), सिंधु नदी प्रणाली के जल का आवंटन पाकिस्तान के पक्ष में (80:20) करती है। सिंधु नदी प्रणाली का उद्गम मुख्य रूप से भारत में है। इस संधि के तहत भारत को

पश्चिमी में बहने वाली सिंधु, चिनाब और झेलम जैसी महत्वपूर्ण नदियों पर नियंत्रण छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा, जिससे वैसे व्यापक जल संसाधन छिन गए जो पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात के विशाल शुष्क एवं सूखाग्रस्त इलाकों का कायाकल्प कर सकते थे। यदि राष्ट्रीय हितों की रक्षा की जाती, तो सुव्यवस्थित जल अवसरचना इस इलाके के संपूर्ण विकास की तस्वीर को बेहतर बना सकती थी। हालांकि, इस महत्वपूर्ण त्याग से व्यापक कूटनीतिक लाभ मिलने की उम्मीदें भ्रामक साबित हुईं। इस संधि के प्रक्रियात्मक संचालन ने चिंताओं को और बढ़ा दिया। इस संधि पर 19 सितंबर 1960 को हस्ताक्षर किए गए थे, लेकिन इसे दो महाने बाद, नवंबर में, संसद के समक्ष रखा गया और वह भी मात्र दो घंटे की औपचारिक चर्चा के लिए, जैसे ही इस संधि से जुड़े तथ्य सामने आए, इसके विभिन्न पहलुओं की पड़ताल के बाद प्रमुख समाचार पत्रों में छपी प्रतिकूल टिप्पणियां सुर्खियों में छापी रहीं। इतने महत्वपूर्ण समझौते के प्रति संसदीय स्तर पर बरते गए इस जल्दबाजी भरे व्यवहार ने लोकतांत्रिक निगरानी, पारदर्शिता और तत्कालीन नेतृत्व की दुर्भावनापूर्ण मंशा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए। इस सीमित संसदीय पड़ताल के बावजूद, सिंधु जल संधि को भारतीय संसद में भारी विरोध का सामना करना पड़ा।

## रूस ने बताया भारत को सबसे प्रिय

समय की कसौटी पर भारत-रूस मित्रता हमेशा खरी उतरी है। ऐसी स्थिति में जब अमेरिका के राष्ट्रपति भारत को रूस से तेल खरीदना बंद करने की धमकी दे रहे और टैरिफ लाद रहे हैं तभी रूस ने ट्रंप को दो टुक जवाब देते हुए कहा कि हमें भारत सबसे प्रिय है। रूस ने भारत के पक्ष में बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि रूस पहले ही भारतीय तेल खरीदारों को दाम में 5 प्रतिशत की रियायत देता है। हम उससे अपना कारोबार और भी बढ़ाएंगे। रूसी दूतावास के प्रभारी रोमन बाबुशकिन ने कहा कि हम तेल खरीद पर भारत को और भी 5 प्रतिशत की छूट दे सकते हैं बशर्त इस पर बातचीत हो। भारत अपनी आवश्यकता का 40 प्रतिशत कूड ऑयल रूस से ले रहा है। यदि भारत को अमेरिकी बाजार में एंटी में टैरिफ की वजह से दिक्कत हो रही है तो उसका रूस के बाजार में स्वागत है। वास्तव में रूस के रास्ते यूरोप को भारतीय माल की आयाजाही बिना तनाव के होगी। रूस से व्यापार बढ़ाने में सुविधा यह है कि डॉलर की जरूरत नहीं पड़ेगी। रुपए-रुबल में लेन-देन हो सकता है। रूस भारतीय माल को यूरोप में

भारत अभी रूस को 44,000 करोड़ रुपए का निर्यात और उससे 6.25 लाख करोड़ से ज्यादा का सामान आयात करता है। यदि बिस्व देश (ब्राजील, रूस, भारत, चीन व द. अफ्रीका) अपनी-अपनी करेंसी में व्यापार सहयोग बढ़ा लें तो काफी हद तक डॉलर की अनिवारिता से बचा जा सकेगा। खपाने में मददगार होगा। फिलहाल भारत अपने लगभग 125 प्रोडक्ट रूस को बेच रहा है। इनमें मशीनें, बॉयलर, परमाणु रिपेक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, ऑर्गेनिक तथा अन्य केमिकल्स का समावेश है। 2014 की तुलना में भारत अभी मोबाइल फोन 78 गुना, इंजीनियरिंग प्रोडक्ट 78 गुना और कृषि उत्पादन दोगुना निर्यात कर रहा है। दोनों देशों के बीच 6.87 लाख करोड़ रुपए का द्विपक्षीय व्यापार है जो 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रहा है। 2030 तक यह व्यापार 8 लाख करोड़ रुपए को पार कर जाएगा। -एन. श्याम

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, जबसे कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बीजेपी और चुनाव आयोग पर मिलीभगत से वोट चोरी का आरोप लगाया है, हमें गुलाम अली की गजल याद आने लगी है— हंगामा है क्यों बरपा, चोरी तो नहीं की है, डाका तो नहीं डाला! अपने बचाव के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त चाहें तो राहुल को यह मशहूर गजल सुना सकते हैं। हमने कहा, सीईसी का काम गजल सुनाना नहीं है। उन्होंने साफ कह दिया कि वोट चोरी का आरोप बेतुका व बेबुनियाद है! इसके लिए राहुल हलफनामा दें या फिर माफी मांगें।% पड़ोसी ने कहा, %निशानेबाज, कितनी ही चोरियां ऐसी होती हैं जिनकी पुलिस थाने में रिपोर्ट नहीं लिखाई जाती। हीरोइन गाती है— चुरा। लिया है तुमने जो दिल तो, नजर नहीं चुराना सनम! जिनके घरों में भ्रष्टाचार से कमाई गई बेहिसाबी दौलत रहती है वह चोरी की रिपोर्ट दर्ज नहीं कराते या चोरी गई रकम को काफी कम करके बताते हैं। दिल्ली में जज यशवंत वर्मा के घर में लगी आग

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्दी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12001 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5
6			7	8
			9	
		10	11	12
	13			
	14	15	16	17
	18			19
	20			
21				22

क्रिया या भाव 5. रेलगाड़ी बस वायुयान आदि के आने तक प्रतीक्षा करने वाले यात्रियों के बैठने का स्थान 8. पागल होना, पागलों जैसी बातें करना 11. समय का सबसे छोटा मान, पल का चौथाई भाग, अवसर 13. अर्जुन (दाएं तथा बाएं हाथों से सुगमतापूर्वक तीर चला सकने के कारण ही अर्जुन का यह नाम पड़ा) 15. स्थावर, शनिवार 16. जन्म देने वाली 17. स्वर्ण, धनुरा (सं.) 20. क्षत्रियों की एक उपाधि (सं.)

वापें से दाएं

- विश्वस्य उत्पन्न करनेवाला
- बहन का लड़का
- एक प्रकार का सुगंधित बहिया चावल
- जंगल, अरण्य (सं.)
- एक देव योनि जिसके राजा कुबेर हैं
- पंकज, पद्म
- पौड़ा, वेदना, दुख
- जो सतक न हो
- नया, नूतन
- वस्त्र, चोरे से बनी रस्तर
- बुरा काम करने वाला (सं.)
- ऊपर से नीचे
- बंटा हुआ, पृथक किया हुआ, बंटवाया हुआ (सं.)
- कृत्ता, एक छपय छंद (सं.)
- एक ही जाति या वर्ग के (लोग)
- दाब, दबाने की

Solution 12000

सु	ले	ख	गं	गा	ज	ली
ल	ब	क	ख	द	ला	
झ	ल	र	द	र	ता	व
ना	ता	चि	मा	ल	ती	
प	वं	त	मा	ला	का	त
सी	ता	र	मा	का	त	
मां	म	हा	का	ल	टी	
त	म	ला	ट	टी	का	

### ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

#### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी, पद एवं स्थान परिवर्तन के योग हैं, शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा, भौतिक सुख प्राप्त होगा, उत्तरदायित्वों को समझाने की आवश्यकता है, वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, यात्रा से कष्ट होगा, वर्ष के अंत में विवाद एवं मतभेद हो सकते हैं, आय में सुधार होगा, भाईयों का सहयोग रहेगा।

मेघ और वृश्चिक वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये रचनात्मक प्रयास

सार्थक होंगे, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है, दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि होगी, पद एवं प्रभाव बना रहेगा।

मेघ - जोखिम के कार्यों से दूर रहें। चापसू लोभों के कारण परेशानी होगी। पारिवारिक सुखों की प्रतिष्ठा होगी। कामकाज में मानसिक रूप से व्यस्त रहना होगा।

वृषभ - बच्चों के करिअर और पढ़ाई की चिंता रहेगी। शांति से अच्छे समाज का इंजिनर करें। आलस्य का अनुभव होगा। आर्थिक कामकाज के प्रति मन में उदासीनता रहेगी।

मिथुन - समय की मांग के अनुसार काम में बदलाव करना पड़ सकता है। संतान पक्ष से सहयोग रहेगा। आपके मनोनुकूल कार्यक्रम बनने का योग है।

कर्क - प्रतियोगी परीक्षा को लेकर चिंता रहेगी। पारिवारिक समस्या के समाधान के अवसर बढ़ेंगे। उत्तरदायित्वों की पूर्ति होगी। स्थान परिवर्तन की संभावना है।

सिंह - आपकी अधिकारी की कठौती का मलाल रहेगा। मित्रों की सलाह पर विचार करें। नवीन योजनाओं का विस्तार होगा। प्रगतिवर्धक समाचार मिलेंगे।

कन्या - सुविधा के सामान पर खर्च अधिक होगा। कामकाज में शिथिलता रहेगी। अरुचि का अनुभव होगा। आर्थिक आगमन का योग है। व्यय पर नियंत्रण रखें।

तुला - देखरेख के अभाव में कोई अच्छी योजना हाथ से निकल सकती है। धैर्य से काम लेना लाभकारी है। महिला जाति की सलाह लाभदायक रहेगी।

वृश्चिक - युवाओं को बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। मन की अभिलाषा पूरी होगी। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी। कुटुंबियों से सहयोग मिलेगा। मित्र मिलन का योग है।

धनु - देनदारी के चलते आपसी विवाद बढ़ेगा। नजदीकी लोगों के कारण परेशानी होगी। कार्यों में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। भाई के साथ संबंधों में मधुरता रहेगी।

मकर - आप अपनी बात मनवाने का भरपूर प्रयास करेंगे। भूमि संपत्ति वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें। कोर्ट के कार्यों में आपके पक्ष में निर्णय होंगे।

कुम्भ - आपके करीबी लोग आपको मजबूर में छोड़ देंगे। प्रेम संबंधी मामलों में प्रगल्भा आयेगी। शिक्षा से संबंधित कामकाज में परिश्रम अधिक करना होगा।

मीन - भावनाओं पर काबू रखकर व्यवहारिक निर्णय करें। अविवाहित वैवाहिकबंधन में बंध सकते हैं। शत्रु वर्ग पराजित होगा।

#### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, अपने कार्यों के प्रति सजग रहने वाला परोपकारी तथा दयालु स्वभाव का होगा। शिक्षा उत्तम रहेगी। नौकरी में अच्छी सफलता प्राप्त करेगा। माता पिता को सुखी रखेगा।

#### उद्युकालीन ग्रह चाल

8		6		5
9	के.7 शु. च.शु.	शु.		
	10		4	
		1		3
11		शु.		
	12		2	

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण अमावस्या शनिवासे दिन 11/8, मघा नक्षत्रे रात 1/35, परिधय योगे दिन 3/5, नाग करणे सू.उ. 5/38 सू.अ. 6/22, चन्द्रचार सिंह, पूर्व-स्नानदान अमावस्या, कुशोत्पाटीनी अमावस्या, शु.रा. 5, 7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक - 7,9,3.

#### व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण अमावस्या को मघा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा और शेर, बिनौला, जीरा, धनियां, लालमिर्च, हल्दी, मैथी के भाव में तेजी का रुख रहेगा। गुड, खांड में नरमी की चाल चलेगी। भाग्यांक 3715 है।

### SUDOKU 7133

	8			1	5			
2			1	8				
3		4	6	7	9			
5			9					
	9	2	3	4	7			
		1						8
4	7	6	3	5				1
	6	7						4
5	3			2				

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें। पहलें से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। पहली का केवल एक ही हल है।

नवभारत सू.दो. 7132

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9